himadri 6
DOON LIBRARY & Research Centre
January, 2012

बच्चों में रचनात्मक प्रवृति पैदा करने के प्रयास हों

दिनांक 30 सितम्बर 2011 को राजभवन सभागार में पुरस्कार वितरण का एक समारोह आयोजित किया गया। दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र तथा इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन ऑफ उत्तराखण्ड की ओर से आयोजित निबन्ध व कविता प्रतियोगिता में अव्वल रहे दस स्कूली बच्चों को प्रदेश के महामहिम राज्यपाल मार्गेट आल्वा ने इस समारोह में पुरस्कार प्रदान किये। निबन्ध प्रतियोगिता का विषय *क्रिएटिव आइडियाज एण्ड इमप्लीमेंटेबल इनोवेसन फॉर द डवलपमेंट ऑफ देहरादून* था। कविता प्रतियोगिता स्वतंत्र विषय पर निर्धारित थी। प्रतियोगिता में शामिल और विजेता प्रतिभागियों को शुभकामनाएं देते हुए महामहिम राज्यपाल ने अपने सम्बोधन में बच्चों को रचनात्मक गतिविधियों की ओर उन्मुख करने की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया और कहा कि वर्तमान कम्प्यूटर व इंटरनेट के इस युग में बच्चों की मौलिकता खोती जा रही है।

इस सन्दर्भ में उन्होंने दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र व इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन ऑफ उत्तराखण्ड द्वारा किये गये इस प्रयास की सराहना करते हुए कहा कि इससे बच्चों में मौलिक क्षमता का विकास होगा।

उन्होंने बच्चों में निहित प्रतिभाओं की सराहना करते हुए उनसे पर्यावरण और अन्य ज्वलन्त समस्याओं पर जागरुक होकर उनके समाधान खोजने का आह्वान भी किया। कविता प्रतियोगिता के हिन्दी वर्ग में सेंट जोसेफ एकेडमी के मयंक सिंघानिया प्रथम, दून स्कूल के अद्वैत झा द्वितीय व राजीव गांधी नवोदय स्कूल की अर्चना यादव तृतीय स्थान पर रही।

कविता प्रतियोगिता के अंग्रेजी वर्ग में सेंट जोसेफ एकेडमी के तनवीर बल, दून स्कूल के विनायक बंसल व वाइन बर्ग स्कूल के शषांक उपाध्याय ने क्रमश: प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त किया। निबन्ध प्रतियोगिता के हिन्दी वर्ग में राजा राम मोहन राय की शिवांगी बड़थ्वाल प्रथम व वेल्हम गर्ल्स स्कूल की राधिका झा द्वितीय स्थान पर रहीं जबकि निबन्ध प्रतियोगिता के अंग्रेजी वर्ग में वेल्हम गर्ल्स स्कूल की अदिति भौमिक प्रथम व इसी स्कूल की विभूति कोछर दूसरे स्थान पर विजेता रहीं। पुरस्कार स्वरुप विजेता बच्चों को लैपटॉप, साइकिल व पुस्तकें वितरित की गयीं।

निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र की गतिविधियों की जानकारी देते हुए कहा कि बच्चों में रचनात्मक प्रवृति विकसित करने के उद्देश्य से संस्थान द्वारा इस तरह के आयोजन किये जा रहे हैं। उन्होंने प्रतियोगिता में शामिल बच्चों की रचनाओं को पुस्तक के रुप में प्रकाशित करने की बात भी कही। इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन ऑफ उत्तराखण्ड के अध्यक्ष पंकज गुप्ता ने कहा बच्चों में अभिनव प्रयोग व विचारधर्मिता के प्रति जागरुकता लाने के लिये हम इस तरह के प्रयास कर रहे हैं।

इस कार्यक्रम के बाद राज्यपाल ने वरिष्ठ नागरिक परमेश्वर नारायण शिवपुरी द्वारा लिखी तीन पुस्तकों 'जैविक कृषि एवम् बागवानी', *'जल संग्रहण तथा उचित उपयोग'* व *'बी सक्सेसफुल यूनिक एण्ड ह्यूमन'* का विमोचन किया। कार्यक्रम में, निरंजन आल्वा, सचिव राज्यपाल अशोक पई, दून पुस्तकालय के राजेन बृजनाथ, इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन के अनिल गोयल, डॉ0 फारुख, कौशल अवधेश सहित स्कूली बच्चे, अध्यापक, अभिभावक व अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

ESSAY AND POETRY COMPETITION FOR SCHOOL STUDENTS

The Doon Library and Research Centre organized an essay competition in association with the Industries Association of Uttarakhand and a poetry

From the Director

It gives me great pleasure to wish a very happy new year to all members, friends and well-wishers of the Doon Library & Research Centre. We are indeed very happy to bring a fresh edition of our newsletter Himadri. The past few months since the last issue have seen the library continue its steady progress. The number of books has now reached 15,000 which was one of the informal and unstated landmarks that we eyed when we started at the end of 2006. We feel extremely satisfied in getting there in just over five years. To be honest I had initially given ourselves much longer for getting there. Reason enough to feel very satisfied. Another landmark that we have crossed in the past few months is the total membership having crossed 1000. This past year, responding to requests from many of our existing and prospective members, we introduced a new category of life members. The response has exceeded our expectations. We now have a total of 1114 members consisting of 1059 annual members, 52 life members and 3 institutional members. Our efforts to get more institutional members have not borne fruit. This past year we decided to invite some of the leading private schools of the city to become institutional members. We have had no response so far. We also offered institutional membership free of charge to all Government intermediate colleges in the city. Only one school came forward. We believe that membership of the library will be of great benefit to the teachers.

Our members have also been making good use of our facilities. Both the reading rooms are full with readers all through the day. At times we also fall short of sitting space in the reading rooms. The members have also been active in borrowing books from the library, During the last three months of 2011 a total of 1755 books were borrowed by our members: 530 in October, 604 in November and 621 in December. All these developments give us enough reason for cheer.

Along with cheer comes some despondency as well, caused mainly by the severe shortage of space that we are facing. We now have hardly any space to accommodate new books. The library, however, cannot stop growing by acquiring new books. A stagnant library, as they say, is a dead library. This poses a real dilemma for us. We are now trying desperately to solve the severe space crunch. Our first priority is to get permission to build additional space in our present premises. Simultaneously we are also trying to get money from the Government of Uttarakhand for this purpose. We realise that our present building is not really suited for the purpose of a library. Ideally, the library should have a separate building especially designed to suit its needs. Failing that we have to make the best of what we have. The big advantage of our present premises is its location in the heart of the city. As a result our members find it very convenient to approach the library.

We request all members and well-wishers to raise their voice in support of our quest for more space. We need more space for stacking books, for our reading rooms, working space for the library staff and at least one hall for holding talks, presentations, seminars etc. I hope you will all agree that Dehradun deserves a first rate library.

B.K. Joshi

competition (Hindi and English) for school students of Dehradun. The winning entries in both the competitions were given prizes by the Governor of Uttarakhand, Her Excellency Smt. Margaret Alva at a function organized in the auditorium of the Raj Bhavan on 30th September, 2011. The prize for first place in the essay competition was a laptop and for second place it was a bicycle. Prize winners in the poetry competition were given gift vouchers for purchase of books.

आसन बैराज का शैक्षिक भ्रमण

दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र के शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम के तहत संस्थान में कार्यरत लोगों और उनके पारिवारिक सदस्यों ने एक दिवसीय भ्रमण का आनन्द उठाया। शैक्षिक भ्रमण दल में शामिल सदस्यों ने दिनांक 13 मार्च 2011 को देहरादून जनपद के आसन बैराज व डाक पत्थर एवम् उत्तराखण्ड की सीमा से लगे पौंटा साहिब की सैर की। इस शैक्षिक भ्रमण के तहत सदस्यों ने जहां आसन बैराज व डाक पत्थर बैराज का अवलोकन कर वहां के स्थानीय पर्यावरण जैसे-जल, वनस्पति व प्रवासी पक्षियों के बारे में जानकारी हासिल की वहीं उन्होंने पौंटा साहिब जैसे ऐतिहासिक स्थल तथा कुल्हाल जल विद्युत गृह को भी देखा। देहरादून से प्रातः 9.00 बजे बस से रवाना होकर यह दल सायं 6.00 बजे देहरादून वापिस पहुंचा। इस शैक्षिक भ्रमण दल में 35 के करीब सदस्य शामिल थे।

ANNUAL PICNIC

The annual family picnic and outing for the staff and of the Doon Library and Research Centre was held on 13th March, 2011. This year we went to the Assan Barrage, Dak Patthar and Paonta Sahib.

कविता पाठ का आयोजन

होटल रीजेण्ट में 28 मई 2011 को दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र द्वारा कविता पाठ का एक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें देहरादून के हिन्दी और अंग्रेजी के कवि उपस्थित थे। हिन्दी के वरिष्ठ कवि व साहित्य अकादमी पुरष्कार से सम्मानित लीलाधर जगूड़ी, जनकवि डॉ0 अतुल शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार जसकिरन चोपड़ा, साहित्यकार रतन सिंह जौनसारी, अंग्रेजी के साहित्यकार प्रो0 अरविन्द कृष्ण मेहरोत्रा, दून पुस्तकालय के सलाहकार राजन बृजनाथ एवम् डॉ0 मनोज पंजानी ने उपस्थित श्रोताओं के सम्मुख अपनी कविताओं का पाठ किया। जनकवि डॉ0 अतुल शर्मा ने जमीन की सच्चाई से जुड़ी दो कविताएं 'जड़ें' व 'सचिवालय का कूड़ेदान' सुनायीं।

वरिष्ठ पत्रकार जसकिरन चोपड़ा की कविता 'मेरा शहर' दून की खूबसूरती

पर केन्द्रित थी जिसकी पंक्तियां थी *इन मुकामों के लिये तो नहीं बनी थी.....हसीन ख्वाबों के सारे सिलसिले चले गये*। प्रो0 अरविन्द कृष्ण मेहरोत्रा ने निराला की कविता वह तोड़ती पत्थर का अंग्रेजी अनुवाद तथा इलाहाबाद के भारती भवन लाइब्रेरी के परिवेश पर आधारित कविता का पाठ किया। वरिष्ठ कवि लीलाधर जगूड़ी ने अपनी कविता जो ठोकर खाते हैं वो प्रवाह पा जाते हैं का वाचन किया। डॉ0 मनोज पंजानी ने उपस्थित श्रोताओं के सम्मुख तीन नज्मों के अलावा मुम्बई शहर पर अपनी कविता प्रस्तुत की। साहित्यकार रतन सिंह जौनसारी ने दैनिक जीवन से सम्बन्धित कई छोटी-छोटी कविताएं सुनायीं। इसके अलावा दून पुस्तकालय के सलाहकार राजन बृजनाथ ने भी अंग्रेजी में दो-तीन कविताएं प्रस्तुत कीं। कविता पाठ के इस कार्यक्रम का संचालन निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने किया। इस अवसर पर नगर के साहित्य प्रेमी, पुस्तकालय के सदस्य व अन्य लोग उपस्थित थे।

POETRY READING SESSION

On 28th May, 2011 a poetry reading session was organized in which some well-known writers and poets of Dehradun read their poems. Participating poets

included the well-known poet Shri Leeladhar Jagudi, a recipient of the Sahitya Akademi Award, Shri Ratan Singh Jaunsari and Dr Atul Sharma who recited poems in Hindi, Jaskiran Chopra and Manoj Panjani who recited poems in Urdu, and Prof. Arvind Krishna Mehrotra, the leading English poet of the country who read his English translations of the poems of Kabir.

केन्द्र–राज्य वित्तीय सम्बन्धों पर व्याख्यान

दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र में आने वाले युवा वर्ग के पाठकों के लिये दिनांक 7 जुलाई, 2011 को एक व्याख्यान का आयोजन किया गया। पुस्तकालय के अध्ययन कक्ष में आयोजित यह व्याख्यान प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले युवाओं के लिये विशेष रुप से महत्वपूर्ण रहा। संस्थान के निदेशक प्रो0 बी0 के0 जोशी द्वारा दिये गया यह व्याख्यान केन्द्र–राज्य वित्तीय सम्बन्धों पर आधारित था। व्याख्यान में उपस्थित युवाओं द्वारा इस सन्दर्भ में प्रो0 जोशी से सम्बन्धित बिन्दुओं पर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी किया। व्याख्यान के दौरान 50 के करीब युवा उपस्थित थे।

LECTURE ON CENTRE-STATE FINANCIAL RELATIONS

Dr B K Joshi delivered a lecture on Centre-State financial relations on 7th July, 2011 in the premises of the Doon Library and Research Centre. The audience consisted of mostly young persons who are members of the library.

हिरोशिमा दिवस मनाया गया

वन विभाग के मन्थन सभागार में 6 अगस्त 2011 को दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र तथा भारतीय विज्ञान लेखक संघ उत्तराखण्ड प्रभाग के संयुक्त तत्वाधान में एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। हिरोशिमा दिवस के अवसर पर आयोजित इस परिचर्चा में वक्ताओं ने परमाणु हथियारों के बढ़ते खतरों पर अपने विचार प्रस्तुत किये। जापान के हिरोशिमा की भयावह त्रासदी को याद करते हुए वक्ताओं द्वारा इसके परिणामों से होने वाले विनाश पर गहरी चिन्ता व्यक्त की गयी। वक्ताओं का मानना था कि आज दुनिया के तमाम देश परमाणु हथियारों के बल पर एक दूसरे से आगे बढ़ने की होड़ में लगे हुए हैं। परमाणु हथियारों को पर्यावरण और मानव जगत के लिये बड़ा खतरा बताते हुए विषय विशेषज्ञों ने इसके उपयोग पर नियंत्रण रखने का सुझाव दिया।

इस परिचर्चा में दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी, सलाहकार राजेन बृजनाथ, भारतीय विज्ञान लेखक संघ उत्तराखण्ड प्रभाग से सम्बद्ध वैज्ञानिक प्रो0 धीरेन्द्र शर्मा व डॉ0 मुकुन्द नीलकण्ठ जोशी के अलावा डॉ0 पुरुषोत्तम उपाध्याय ने प्रतिभाग किया। डी0आई0टी0 के छात्र–छात्राओं ने विषय विशेषज्ञों के सम्मुख अपने सवालों का समाधान भी किया। परिचर्चा के समापन सत्र में डॉ0 पुरुषोत्तम उपाध्याय ने उपस्थित लोगों को हिरोशिमा त्रासदी पर स्लाइड शो के माध्यम से कई महत्वपूर्ण जानकारियां दी। इस मौके पर विज्ञान से जुड़े तमाम व्यक्ति, पुस्तकालय के सदस्य व छात्र–छात्राएं उपस्थित थीं।

HIROSHIMA DAY OBSERVED

In collaboration with the Science Writers Association, Uttarakhand a discussion on the menace of nuclear weapons was held on the occasion of Hiroshima Day on 6th August, 2011. Speakers who shared their thoughts on the scourge and menace of nuclear weapons included occasion Prof. Dhirendra Sharma, Dr Purshottam Upadhyaya, Dr BK Joshi, Shri Rajen Brijnath and Dr MN Joshi. The discussion, held in the Manthan Meeting Hall of the Forest Department was attended by a number of prominent citizens of the city.

राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस का आयोजन

एम0के0पी0 (पी0जी0) कालेज के सभागार में 12 अगस्त 2011 को डॉ0 एस0 आर0 रंगनाथन का जन्मदिन राष्ट्रीय पुस्तकालय दिवस के रुप में मनाया गया। दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र तथा सैण्ट्रल लाइब्रेरी एसोसिएशन (सीजीएलए) के तत्वाधान में इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आई0 आई0टी0 रूड़की के पुस्तकालयाध्यक्ष डा0 योगेन्द्र सिंह इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। मुख्य अतिथि ने डॉ0 एस0 आर0 रंगनाथन के व्यक्तित्व को याद करते हुए कहा कि उन्होंने पुस्तकालय विज्ञान के क्षेत्र में विविध प्रयोगों के जरिये किताबों के प्रति आम लोगों में रुझान पैदा करने के प्रयास किये। उन्होंने कहा कि पुस्तकालय मात्र किताबों के भण्डार नहीं हैं अपितु ये भविष्य की स्वर्णिम किरण हैं जहां से कई प्रतिभाओं का जन्म होता है। उन्होंने पुस्तकालय को एक प्रगतिशील संस्था बताते हुए कहा कि पुस्तकालय का निरंतर विकास ही देश के विकास की निशानी है।

दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र के निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने डॉ0 रंगनाथन को भारतीय पुस्तकालय का जनक बताते हुए उनके द्वारा दिये गये योगदान को महत्वपूर्ण बताया और कहा कि सही मायने में जागरुक पाठकों की संख्या ही उस पुस्तकालय का मापदण्ड निर्धारित करती है। उत्तराखण्ड में पुस्तकालयों की स्थिति पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने इस दिशा में सकारात्मक पहल करने की जरुरत बतायी। दून पुस्तकालय के सलाहकार राजन बृजनाथ ने कहा कि ज्ञान से बढ़कर दूसरा बड़ा धन कोई नहीं है, पुस्तकालयों से प्राप्त ज्ञान से हम समाज का सही विकास कर सकते हैं। एम0 के0पी0 (पी0जी0) कालेज की प्रधानाचार्य इन्दु सिंह ने शैक्षिक विकास में पुस्तकालय विज्ञान की उपयोगिता पर प्रकाश डाला और कहा शोध कार्यों में पुस्तकालयों का अहम योगदान रहता है। कार्यक्रम में उपस्थित चरनजीत कौर, वी0पी0 सिंह, ए0के0 सुमन व रमेश गोयल ने भी डॉ0 रंगनाथन के योगदान पर अपने विचार प्रकट किये। कार्यक्रम के अन्त में निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी एवम् सुमन भारद्वाज ने स्लाइड शो के माध्यम से दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र का परिचय दिया। इस कार्यक्रम में सैण्ट्रल लाइब्रेरी एसोसिएशन (सीजीएलए) की ओर से दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र के पुस्तकालयाध्यक्ष के0सी0 सक्सेना को लाइफ एचीवमेंट पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र मे कार्यरत लोग, पुस्तकालय के सदस्य एम0के0पी0 की छात्राएं, व पुस्तकालय संगठन से जुड़े व्यक्ति इस कार्यक्रम में उपस्थित थे।

CELEBRATION OF LIBRARIAN'S DAY

The Doon Library & Research Centre organised a function in collaboration with the Central Government Libraries Association (CGLA) Dehradun on 12th August, 2011 in celebration of Librarian's Day which falls on the birth anniversary of Dr S.R. Ranganathan, the father of Library Science in India. Shri Yogendra Singh, Librarian, IIT, Roorkee was the chief guest on the occasion. Paying tributes to dr Ranganathan and his contribution to library science in the world and to the growth of the library in movement in India, he referred to a book on the 100 great librarians of America wherein it was mentioned that many of the great librarians would not have achieved what they were able to achieve if the example of Dr Ranganathan was not before them. Dr BK Joshi said that the difference between the developed and not so developed societies was the presence or absence of a robust library system. Shri KC Saxena, Librarian, Doon Library and Research Centre was conferred a Lifetime Achievement Award by the CGLA for devoting nearly 50 years of his life in the field of Library Science. Shri V.P. Singh, who had recently retired as librarian of the Wadia Institute of Himalayan Geology was also honoured by the CGLA for his contribution. The programme was compered by Shri D.K. Pandey of CGLA.

मिथ्स ऑफ रियलिटिज ऑफ सिक्यूरिटी एण्ड पब्लिक अफेयर्स पुस्तक का विमोचन

दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र की ओर से 24 सितम्बर 2011 को अरविंद सिंह की पुस्तक *मिथ्स ऑफ रियलिटिज ऑफ सिक्यूरिटी एण्ड पब्लिक अफेयर्स* का विमोचन राजपुर स्थित इन्द्रलोक होटल में सुप्रसिद्ध लेखक आइ एन सीली ने किया। उन्होंने पुस्तक की समीक्षा करते हुए कहा कि इस पुस्तक में लेखक ने अपनी दृष्टि से जिन घटनाओं का विवरण दिया है उनके चित्र अक्षरों के मध्य साफ तौर पर नजर आते हैं।

निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी ने कहा कि यह पुस्तक इंडो चाइना वार व सिक्योरिटी सिस्टम को जीवंत तरीके से प्रस्तुत करती है। दून विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 गिरिजेश पन्त ने लेखक अरविंद सिंह की सराहना करते हुए सुझाव दिया कि जिन खास लोगों का जिक्र इसमें छूट गया है उन्हें पुस्तक के अगले संस्करण में शामिल करना उपयुक्त होगा। वक्ताओं का कहना था कि अरविंद सिंह ने जिस मेहनत के साथ इस पुस्तक का लेखन किया है वह

प्रशंसनीय है। वक्ताओं का मानना था कि लेखक ने देश के राजनैतिक व सुरक्षा से सम्बन्धित महत्वपूर्ण सवालों को इस पुस्तक में उठाया है। विमोचन समारोह में देहरादून के कई गणमान्य व्यक्ति व प्रबुद्ध जन उपस्थित थे।

BOOK LAUNCH

The Doon Library & Research Centre co-sponsored the launch of the book *Myths and Realities of Security and Public Affairs* authored by Arvinder Singh on 24th September, 2011. The book was launched by the well-known author Allen Sealy. Others who spoke on the occasion were Prof Girijesh Pant, Vice-Chancellor, Doon University, Shri Raj Kanwar senior journalist, and Dr B.K. Joshi. Shri Rajen BrijNath compered the programme.

धूमधाम से मना बाल दिवस

पिछले 14 नवम्बर 2011 को दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र की ओर से परेड ग्राउण्ड स्थित कन्या पूर्व माध्यमिक और प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के साथ इस साल भी बाल दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस दौरान बच्चों द्वारा विद्यालय परिसर में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। छोटे-छोटे बच्चों ने जहां अपनी तोतली आवाज में कविताएं सुनाकर वाह वाही लूटी वहीं बड़े बच्चों द्वारा प्रस्तुत लोकगीत व लोक नृत्यों ने उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के पश्चात तीन वर्गों में कुर्सी दौड़ खेल का आयोजन किया गया। कुर्सी दौड़ खेल प्रतियोगिता में जूनियर वर्ग में जनतनिशा (कक्षा 7) प्रथम,सोनू (कक्षा 7) द्वितीय व प्रकाश (कक्षा 6) तीसरे स्थान पर, प्राथमिक वर्ग में गुलजेब (कक्षा 5) प्रथम, राहुल (कक्षा 4) द्वितीय व गुशरा (कक्षा 5) तीसरे स्थान पर रहे जबकि मलिन बस्ती वाले बच्चों के वर्ग में धीरज (कक्षा 3) ने प्रथम, टिना (कक्षा 3) ने द्वितीय व अजय (कक्षा 3) ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम सम्पन्न होने के बाद कुर्सी दौड़ खेल प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले बच्चों को पुरष्कृत किया गया।

बच्चों में साहित्यिक पठन पाठन की रुचि जाग्रत करने के उद्देश्य से कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय व प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापिकाओं को दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र की ओर से बाल साहित्य की विविध पुस्तकों के सैट भी प्रदान किये गये। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में दून पुस्तकालय के सलाहकार राजन बृजनाथ उपस्थित थे। इस कार्यक्रम में पुस्तकालयाध्यक्ष के0सी0 सक्सेना तथा कन्या पूर्व माध्यमिक विद्यालय, प्राथमिक विद्यालय व मलिन बस्ती स्कूल की प्रधानाध्यापिकाएं व अध्यापिकाएं भी उपस्थित थीं। बाल दिवस के इस आयोजन में दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र की सुमन भारद्वाज, खुशीराम शर्मा, जगदीश सिंह महर, मीनाक्षी कुकरेती भारद्वाज, गीतान्जलि भट्ट, मधु डंगवाल, मधन सिंह विष्ट, नवीन डोबरियाल व गामा चन्द व नरेश का विशेष सहयोग रहा।

CHILDREN'S DAY CELEBRATED

Continuing the tradition being followed for the past few years the Doon Library & Research Centre celebrated Children's Day on 14th November, 2011 with children of the Middle & Primary School, Parade Ground. Games were organized for the children who also put up a short, impromptu cultural programme on the occasion. Refreshments were served to all children on the occasion and a packet containing children's books were donated to the school on behalf of the Doon library & Research Centre. The entire staff of the Doon Library participated in organizing children's day celebrations.

न्यूक्लियर एनर्जी पर परिचर्चा

दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र द्वारा 11 नवम्बर 2011 को रीजेन्ट होटल में न्यूक्लियर एनर्जी विषय पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा में प्रमुख रुप से वैज्ञानिक प्रो0 धीरेन्द्र शर्मा, हैस्को के निदेशक डॉ0 अनिल जोशी तथा एम्स नई दिल्ली के बाल चिकित्सा विभाग के पूर्व अध्यक्ष डॉ0 पुरुषोत्तम उपाध्याय ने भाग लिया। डॉ0 अनिल जोशी ने कहा कि हमारी निरन्तर बढ़ती जा रही ऊर्जा सम्बन्धी जरुरतों के कारण बड़े-बड़े बाधों तथा न्यूक्लियर प्लांटों से पर्यावरण को बहुत नुकसान पंहुच रहा है। इससे बचने के लिये हमें अपने जीवन शैली में बदलाव लाकर ऊर्जा सम्बन्धी जरुरतों को सीमित करने के प्रयास करने चाहिए।उन्होंने कहा कि विज्ञान के सही उपयोग से समाज को फायदा ही होता है। उसके गलत इस्तेमाल और प्रबन्धन में चूक हो जाने से हादसे होते हैं।

यह हम सबको तय करना होगा कि हमें विज्ञान वरदान के रुप में चाहिए अथवा अभिशाप के रुप में। प्रो0 धीरेन्द्र शर्मा ने अपने वक्तव्य में कहा कि खनन वाले क्षेत्रों के समीप रहने वाले लोग अधिकांशत: बीमार रहते हैं। वहां का हवा–पानी व खानपान सब प्रदूषित हो जाता है। न्यूक्लियर रिएक्टर से जो कचरा निकलता है वह भी बहुत हानिकारक होता है। उन्होंने इसे मानव के लिये खतरनाक बताते हुए कहा कि ऊर्जा सम्बन्धी जरुरतों के लिसे हमें सौर ऊर्जा को विकल्प के रुप में चुनना चाहिए। उन्होंने उदाहरण देकर कहा कि अब यूरोप के अधिकतर देश पर्यावरण को सुरक्षित रखने के लिये न्यूक्लियर प्लांटों को बन्द कर रहे हैं। डॉ0 पुरुषोत्तम उपाध्याय ने स्लाइड शो के माध्यम से देश के न्यूक्लियर एनर्जी प्लांटों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने जानकारी दी कि विज्ञान का उचित प्रयोग होना आवश्यक है। नरौरा न्यूक्लियर एनर्जी प्लांट में इंजीनियर रह चुके योगेन्द्र शर्मा ने भी अपने अनुभव सुनाये। इस परिचर्चा का संचालन दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र के सलाहकार राजन बृजनाथ ने किया। इस परिचर्चा में दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र के सदस्य, पुस्तकालय स्टाफ, व स्कूली छात्र–छात्राएं उपस्थित थीं।

PANEL DISCUSSION ON NUCLEAR ENERGY

On 11th November, 2011, the Doon Library and Research Centre organized a panel discussion on Nuclear Energy. Dr Dhirendra Sharma, Dr Anil Joshi, Dr Purshottam Upadhyaya and Shri Rajen BrijNath were the participants. The consensus was that the discharge of nuclear waste was a threat to the environment and some rethinking was necessary on the use of nuclear energy

प्रो0 गिरिजेश पंत को दी गयी भावभीनी विदायी

दून विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो0 गिरिजेश पंत के कार्यकाल पूरा होने पर दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र की ओर से उन्हें होटल ग्रेट वैल्यू में भावभीनी विदायी दी गयी। वक्ताओं ने प्रो0 पंत द्वारा दून विश्वविद्यालय को तीन साल के दौरान नई पहचान दिलाने के लिये किये गये योगदान की सराहना की गयी। पुस्तकालय की ओर से उन्हें प्रतीक स्वरुप पुस्तक भेंट की गयी। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी, राज्यपाल के सचिव श्री अशोक पई, प्रो0 धीरेन्द्र शर्मा, डॉ0 आनन्द शर्मा, श्री पंकज गुप्ता, डॉ0 मालविका चौहान, श्री राजन बृजनाथ, डॉ0 फारुखी, एवम् डॉ0 राजेन्द्र डोभाल आदि उपस्थित थे। प्रो0 गिरिजेश पंत के सम्मान में रात्रि भोज भी दिया गया।

FAREWELL TO PROF GIRIJESH PANT, VICE-CHANCELLOR, DOON UNIVERSITY

On 15th January, 2012, the Doon Library and Research Centre organized a dinner to bid farewell

to Prof. Girijesh Pant, Vice-Chancellor, Doon University who was leaving on completion of his term of office. A number of prominent citizens of Dehradun were present on the occasion. Speaking on the occasion Dr BK Joshi, Director, Doon Library and Research Centre recalled Prof. Pant's great contribution to laying the groundwork for building the university as a centre of excellence and complemented him for starting academic activity in the Doon University. Prof Pant thanked the eminent citizens of Dehradun for their cooperation extended to him during his tenure. He hoped that this cooperation would be extended to his successor also.

PAUL COELHO; A NEW YOUTH ICON

A novelist with a liking for abstract philosophy is a very unlikely candidate for being a youth icon. But if the preferences of the young readers are anything to go by he certainly qualifies. Some of his works like The Alchemist and Eleven Minutes have been translated in Hindi also. One reason could be the thinnes of the size of his works. That prevents the reader from being intimidated. One young reader said that as she was going out of town the next day she wanted to have The Alchemist issued. It took sometime to find that book. A suggestion that she could have another Coelho novel angered her. She said that yesterday she had gone to a friends place and she read twenty odd pages from The Alchemist and she would settle for nothing else.

Fortunately we were able to find The Alchemist for her. The joy was similar to that of a child who had discovered her favourite toy.

AURIOL WEIGOLD, CHURCHILL, ROOSEVELT AND INDIA, PROPAGANDA DURING WORLD WAR II, NEW DELHI, 2009

The work under review makes an intensive study of a important issue, which would interest all scholars of history, international relations and media. The subject dealt with deals with the American interest in India during the second world war, especially after the Japanese occupation of Burma after it captured Indonesia, French Indo-China and Malaya. The importance of India increased as it was going to be a base for the Allied operations in South-East Asia. Winston Churchill, the British Prime Minister had asserted that he had 'not become the King's first minister to preside over the liquidation of the empire'. But their was pressure from President Roosevelt to make a settlement with the Indian nationalists. The Cripps Mission was sent to India with this purpose. As subsequent events proved it was essentially a device to buy time. The British colonial government in India had been bracing itself to face a confrontation with the Congress since 1939. The Japanese would wait till the monsoon season was over before they could think of an attack on India through Burma. Two million personnel were recruited in the British Indian Army. Such a huge army could be used to suppress any movement launched by the Congress. Therefore was Churchill was in no mood to make any concessions to Indian nationalism.

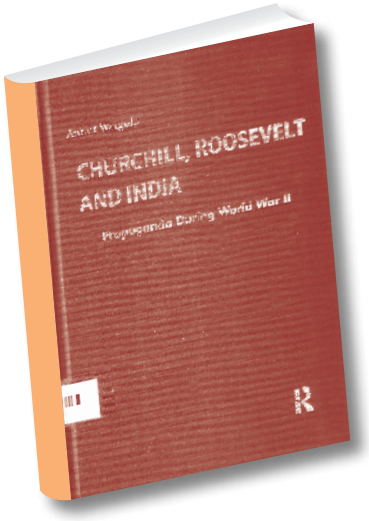

In order to convince the Americans a huge propaganda machinery was set up by His Majesty's Government. Roosevelt, however had his own sources of information in order to assess the situation in India. This book gives a detailed factual account about the role of Louis Johnson, who was the President's personal representative in India as well as the role of American Indpophiles such as Louis Fischer and Edgar Snow in presenting true facts about India before the American public. The British propaganda line blaming the communal problem and the inability of the nationalist leadership for taking the responsibility of self government was not believed by the American press. Churchill was concerned that his failure to come up with a viable agreement with the Indian nationalists could jeopardize American aid to British India. Because of Churchills die hard attitude the Cripps mission was doomed to be a failure. A vast propaganda machinery in Washington was at work to convince the Americans that it was the communal imbroglio and the rigidity of the Indian nationalists which was to be blamed for the failure.

Their was considerable sympathy in America for the cause of Indian nationalism. However, the decision of the Congress to launch the Quit India movement in August, 1942, cooled off that sympathy and Churchill was able to win the propaganda battle for the time being.

This study should stimulate more studies of this nature. India's independence in 1947 started the process of decolonization. Between 1945 and 1947 how did America view political developments in India should become the subject matter of another study After 1919 the Government of India was a juridical entity. There was an Agent General representing India in Washington. Girja Shankar Bajpai, who held the office from 1942 till 1947, had his own views on the issue of political developments in India. These views have been mentioned at some length in this book. It would be interesting to see how he presented the case of India after 1945. An India League functioned in America also. The activities of the League could be a subject of another book, especially in the period after 1945. This particular study has defined a framework to study the historical background of Indo-US relations.

- Manoj Panjani

पुस्तक परिचय

केदारखण्ड

प्राचीन भारतीय साहित्य में वर्णित केदारखण्ड हिमालय के पंचखण्डों में एक है। वर्तमान उत्तराखण्ड का गढ़वाल क्षेत्र इसी केदारखण्ड के अन्तर्गत आता है। मध्य हिमालयी संस्कृति व पर्यटन पर केन्द्रित हेमा उनियाल की पुस्तक 'केदारखण्ड' उत्तराखण्ड के इसी अंचल के प्रमुख दर्शनीय स्थलों एवम् मंदिरों की जानकारी देती है। लेखिका ने प्रस्तुत पुस्तक में स्थानीय मंदिरों के वास्तु शिल्प के साथ ही क्षेत्र के भौगोलिक,ऐतिहासिक, सामाजिक व सांस्कृतिक विशेषताओं पर भी प्रकाश डालने का प्रयास किया है। स्थानीय परम्परा में प्रचलित मान्यताओं तथा देवपूजन से सम्बन्धित विवरण, देवालय व दर्शनीय स्थलों के चित्रों ने पुस्तक को बोधगम्य बना डाला है। पुस्तक की विशेषता यह है कि इसकी रचना मात्र संदर्भ ग्रंथों के आधार पर ही नहीं की गयी है अपितु लेखिका द्वारा इसके लिये 18 शोधपरक यात्राएं भी की गयीं हैं। जिस कारण यह पुस्तक अधिक प्रमाणिक और विशिष्ट बन गयी है। रोचक विषय वस्तु और सरल भाषा के कारण यह पुस्तक पाठकों का ध्यान अपनी ओर खींचती है।

20x30 से0मी0 आकार व 540 पृष्ठों वाली इस पुस्तक में तकरीबन 300 से अधिक छायाचित्र शामिल किये गये हैं। आशा की जानी चाहिए कि हिमालय के धार्मिक व सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में रुचिवान पाठकों व शोधार्थियों के लिये यह पुस्तक उपयोगी साबित होगी।

पुस्तक : केदारखण्ड

लेखिका : हेमा उनियाल

मूल्य : ₹ 750

प्रकाशक : तक्षशिला प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

उत्तराखण्ड में गाँधी जी की यात्रा

स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में उत्तराखण्ड की भी अग्रणी भूमिका रही है। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौर में यातायात व संचार सुविधाओं के अभाव के बावजूद भी यहां के लोगों की भागीदारी रही। उत्तराखण्ड के स्वतंत्रता संग्राम आन्दोलन में महात्मा गाँधी जी के विचारों भी महत्वपूर्ण योगदान रहा। स्वतंत्रता आन्दोलन के दौर में गाँधी जी ने उत्तराखण्ड के हरिद्वार, गुरूकुल कांगड़ी, हल्द्वानी, नैनीताल, ताकुला, भवाली, ताड़ीखेत, अल्मोड़ा, कौसानी, बागेश्वर, काशीपुर, देहरादून व मंसूरी जैसे स्थानों की यात्रा की।

उन्होंने वर्ष 1915 से 1946 तक तकरीबन 6 बार उत्तराखण्ड की यात्रा की। वर्ष 1915 के अप्रैल माह में वे कुम्भ के मौके पर पहली बार हरिद्वार व ऋषिकेश गये। इसके बाद वर्ष 1916 में स्वामी श्रद्धानन्द के आग्रह पर उन्होंने हरिद्वार के गुरूकुल कांगड़ी में व्याखान दिया।

जून 1929 में गाँधी जी स्वास्थ्य लाभ करने अहमदाबाद से कुमाँऊ की यात्रा पर निकले। 14 जून 1929 की सुबह वे बरेली से हल्द्वानी पहुंचे। हल्द्वानी में एक सभा में भाग लेने के पश्चात वे नैनीताल पहुंचे। नैनीताल की सार्वजनिक सभा में उन्होंने पहाड़ की गरीबी, खादी प्रचार व आत्मस्वावलंबन पर विचार दिये गये। महिलाओं की सभा में उन्होंने स्वदेशी सामग्री अपनाने व चर्खा कातने की अपील की। ताकुला गांव में उन्होंने गाँधी मंदिर का शिलान्यास किया। भवाली में एक सार्वजनिक सभा में नगरवासियों ने उन्हें मानपत्र भेंट किया।

16 जून को वे खैरना होते हुए ताड़ीखेत पंहुचे जहां उन्होंने 1921 के असहयोग आन्दोलन के दौरान खोले गये प्रेम विद्यालय के वार्षिकोत्सव में भाग लिया। एक सार्वजनिक सभा में उन्होंने स्थानीय ग्रामीण जनों को राष्ट्रीय प्रेम का संदेश दिया।

18 जून को वे रानीखेत होते अल्मोड़ा पंहुचे। उन्होंने चौघान पाटा पार्क में एक विशाल जन समूह को सम्बोधित किया। तत्कालीन म्यूनिसिपल बोर्ड के अंग्रेज चेयर मैन ओकले ने उनके सम्मान में मानपत्र पढ़ा। अल्मोड़ा में रहकर उन्होंने रामजे कालेज, शुद्ध साहित्य समिति व भारतीय मसीही केन्द्र, महिला सभा व मल्ली बाजार में सभाओं को सम्बोधित किया। 20 जून को लक्ष्मेश्वर में भी गाँधी जी की सभा हुई। अगले दिन 21 जून को वे यसोदा माई व अंग्रेज साधु रोनाल्ड निक्सन से भी मिले। अल्मोड़ा में गाँधी जी चार दिन रहे।

22 जून को अल्मोड़ा से चल कर गाँधी जी शाम को कौसानी पंहुचे। और अगले दिन वे गरूड़ तक मोटर में बैठकर वहां से बागेश्वर तक पैदल गये। दोपहर में बागेश्वर पंहुच कर उन्होंने शाम को स्वराज्य मंदिर का शिलान्यास किया और एक सार्वजनिक सभा में अपने विचार दिये। वे शाम को सरयू बगड़ की प्रार्थना सभा में भी शामिल हुए। अगले दिन बागनाथ मंदिर के दर्शन कर वे कौसानी चले गये।

कौसानी में 24 जून सोमवार को उन्होंने श्रीमद्भगवत गीता के उपर अनासक्ति योग पर लिखी प्रस्तावना का समापन किया। 1 जुलाई तक सप्ताह भर कौसानी में रहकर स्वास्थ्य लाभ किया, लेखन, स्वाध्याय के साथ हिमालय दर्शन का आनन्द उठाने के अलावा उन्होंने स्थानीय लोगों से बात-चीत

भी की। 2 जुलाई की दोपहर में गॉधी जी कौसानी से काशीपुर होकर दिल्ली को गये। 1929 के सितम्बर में गॉधी जी देहरादून व मंसूरी की यात्रा पर आये। देहरादून में उन्होंने कन्या गुरूकुल का भ्रमण किया और शहंशाही आश्रम में पीपल का एक पेड़ लगाया।

अपनी दूसरी कुमाँऊ यात्रा के दौरान वे 18 जून 1931 को वे शिमला से नैनीताल पंहुचे। मई 1946 में वे पुनः मसूरी आये और 8 दिन तक रहे। इस दौरान उन्होंने सभाओं में शामिल होकर गरीबों के लिए चन्दा एकत्रित करने का कार्य किया।

उत्तराखण्ड की इन यात्राओं में गॉधी जी के साथ अलग-अलग स्थानों में कई महत्वपूर्ण व्यक्ति साथ रहे जिनमें माता कस्तूरबा, मीरा बहन, खुर्सीद बहन, नेहरू, आचार्य कृपलानी, देवदास व प्रभुदास गॉधी, प्यारे लाल, शान्ति लाल त्रिवेदी, महावीर त्यागी, स्वामी श्रद्धानन्द, आचार्य रामदेव, विक्टर मोहन जोशी, देवकी नन्दन पाण्डे व गोविन्द लाल साह जैसे कई प्रमुख व्यक्ति थे।

कुमाऊं अंचल में रामलीला की परम्परा

पहाड़ की सांस्कृतिक परम्परा को सहेजती एक पुस्तिका

समीक्षक -डॉ0 अरुण कुकसाल

पहाड़ी रामलीला के कई मनमोहक रंग अभी तक मेरे मन मस्तिष्क में बसे हुए हैं। उन्होंने मुझे अपने संगी साथियों के सुनहरे कणों, रामरज,पावडर व कुमकुम से पुते वे चेहरे आज भी भली प्रकार याद हैं। उनके चेहरे का यह मेकअप रात की रामलीला के बाद सुबह स्कूल जाने तक बरकरार रहता था। मेरे बचपन व किशोरावस्था का अधिकांश हिस्सा कुमांऊ में बीता। रानीखेत और अल्मोड़ा की रामलीला के तमाम दृश्य, पात्रों का अभिनय और हारमोनियम व तबले के संगीत के साथ गूंजने वाली स्वर लहरियां बरबस मन को छू लेती थीं।

कुमाऊं की रामलीला के इन तमाम स्मृतियों को फिर से एक बार और तरोताजा कर दिया है - दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र द्वारा प्रकाशित पुस्तिका **कुमाऊं अंचल में रामलीला की परम्परा** नामक पुस्तिका ने। कुमाऊं अंचल की इस रामलीला का उत्तराखण्ड की संस्कृति में महत्वपूर्ण भूमिका है। पारसी थियेटर शैली पर आधारित होने तथा इसके कथानक व गीतों पर अवध अंचल की छाप होने के बावजूद भी इस रामलीला में कुमांऊ की खुसबू का अहसास अवश्य होता है।

कुमाऊं की इस परम्परागत रामलीला से परिचित कराने के उद्देश्य से इस पुस्तिका में अल्मोड़ा के सुपरिचित रंगकर्मी श्री शिवचरण पाण्डे ने अपने लेख में

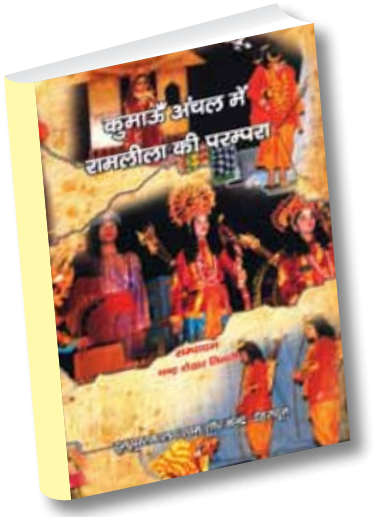

कुमाऊंनी रामलीला के ऐतिहासिक विकास और इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डाला है। प्रसिद्ध विज्ञान कथाकार श्री देवेंद्र मेवाड़ी, श्री हेम चन्द्र लोहनी व श्री हरीश चन्द्र जोशी के ओखलकाण्डा व पन्तनगर, सतराली व लोहाघाट इलाके की रामलीला पर लिखे संस्मरण रोचक बन पड़े हैं। पुस्तिका के अन्त में श्री शंकरलाल साह ने हुक्का क्लब की सांस्कृतिक गतिविधियों पर उल्लेखनीय जानकारी दी है। उत्तराखण्ड की इस समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा को सहेजने के क्रम में दून पुस्तकालय एवम् शोध केन्द्र, देहरादून का यह प्रयास उपयोगी कहा जा सकता है। यह पुस्तिका रामलीला विषय पर अध्ययन करने वालों को प्रेरित करेगी। पुस्तिका के प्रकाशन के लिये संस्थान के निदेशक प्रो0 बी0के0 जोशी व सम्पादन के लिये श्री चन्द्रशेखर तिवारी बधाई के पात्र हैं।

साहित्य

कुमाऊं अंचल में रामलीला की परम्परा

पुस्तक रामीक्षा

"कुमाऊं अंचल में रामलीला की परम्परा"
सम्पादक : चन्द्रशेखर तिवारी
दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र, देहरादून
पृष्ठ : 56

DOON LIBRARY & Research Centre

Himadri is published by Dr B K Joshi on behalf of Doon Library & Research Centre, 21 Parade Ground, Dehradun 248001, Uttarakhand and printed at Shiva Offset Press, Dehra Dun. Ph: +91 135 2711485; Fax: +91 135 2713065;
E-mail: doonlib@yahoo.co.in; Website: www.doonlibrary.org